# ऐसे थे महान तपस्वी ....

पेज 3 का शेष..

सहज भाव से प्रजा भी उनकी आज्ञा का पालन करेगी। एक बार सन् 1967 में बाबा दिल्ली जाने वाले थे, परन्तु शिव बाबा ने जाने के दिन ही मना कर दिया। बस उन्होने प्रभु-आज्ञा को शिरोधार्य किया।

**7- अचल चट्टान थे वे समस्याओं के सामने -** सोना तपकर ही निखरता है। लोहे को अति शक्तिशाली बनाने के लिए भी बार-बार अग्नि में तपाया जाता है। बाबा की 33 वर्ष की अलौकिक यात्रा जहाँ ईश्वरीय सुखों से भरी थी, वहीं कई बाधाओं की दीवारें भी उन्हें पार करनी पड़ी। प्रारंभ में ही सम्पूर्ण बन समुदाय का भारी विरोध..परन्तु वे तो ईश्वरीय मत पर थे। न भय था, न विचलित थे। लोग गाली देते ही रह गये और उन्होने पवित्र आत्माओं का झुण्ड तैयार कर दिया।

फिर आया बेगरी पार्ट। सम्पूर्ण धन समाप्त हो गया। खाने को कुछ भी नहीं और चार सौ लोगों की जिम्मेदारी। परन्तु जिस साहस, धैर्य, विश्वास व दृढ़ता से उस कई वर्ष के समय को पार किया, यह उनके सिवाय शायद अन्य कोई न कर सके। बात केवल खिलाने पिलाने की ही नहीं थी, सबकी मानसिक स्थिति को भी सम्भालना था। सेवाओं के क्षेत्र में अनेक सम्प्रदायों का विरोध भी उनके लिए कड़ी चुनौति थी। परन्तु सरलता, निर्भयता, निश्चय व शुभ-भावनाओं के बल से वे अपनी शिव-शक्ति सेना को विजयी व सम्पन्न बनाते रहे।

**8- नारायणी नशे में मस्त रहते थे वे -** क्योंकि वे स्वयं नारायण बनने वाले थे और उन्हें इसका सम्पूर्ण नशा रहता था। उनके मुख पर भी आ जाता था कि मैं ये बूढ़ा तन छोड़कर छोटा श्रीकृष्ण बनूंगा। उनके चेहरे पर इसके हावभाव देखे जा सकते थे। उन्हीं के कारण प्रभु-प्रेम में मग्न रहने वालों को नारायणी नशे में रहने वाले कहा जाने लगा। एक बार वे हॉल में अकेले ही डाँस कर रहे थे। दादी जानकी ने उन्हें देख लिया। वे बोले - बच्ची, बाबा को नशा चढ़ा हुआ है कि मैं भविष्य में क्या बनने वाला हूँ ! उन्हें न केवल भविष्य का नशा था बल्कि अपने गॉडली स्टूडेन्ट होने का, प्रभु मिलन का, प्रभु के साथ का व उसको रथ देने का भी नशा था।

**9- बेफिक्र बादशाह थे वे -** ''पाना था सो पा लिया, अब और क्या बाकी रहा'' -ये उनके दिल का गीत था, यही उनके जीवन का संगीत थे। चाहे जीवन की अलौकिक यात्रा में कुछ भी आया हो, किसी ने उनको उदास, भयभीत, चिन्तित या परेशान नहीं देखा। अनेक ब्रह्मा वत्स भी यज्ञ में विघ्न डालते थे, ग्लानि करने लगते थे, परन्तु वे सदा यही कहते थे कि शिवबाबा बैठा है, वही यज्ञ का मालिक है, उसी की छत्रछाया हमारे सिर पर है, वह सब कुछ सम्भाल लेगा। यह नशा व निश्चय उन्हें सदा सभी गमों से दूर बेफिक्र बादशाह बनाये रखता था। वे यहीं सच्चे बादशाह, सिंह के समान निर्भय थे और उनका भविष्य में विश्व-महाराजन बनना तो तय ही था।

**10 -नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा थे वे -** सम्पूर्ण गीता ज्ञान को उन्होने अपने जीवन में उतारा था। चाहे दूसरे अध्याय का आत्म-ज्ञान व स्थिर-बुद्धि, चाहे योगयुक्त जीवन व निष्काम भाव, चाहे मनोविकारों पर विजय या सात्विक वृत्ति और अंतिम नष्टोमोहा व स्मृति स्वरूप स्थिति। ये सब उनके जीवन में साकार हुए थे।

यद्यपि उनकी धर्मपत्नी, पुत्र व पुत्री रूद्र यज्ञ में ही उनके साथ थे, परन्तु कोई भी यह नहीं जान सकता था कि ये उनका लौकिक परिवार है। उन्होने तो आत्मिक भाव धारण कर लिया था। सारा विश्व ही उनका परिवार था। वे प्रजापिता थे और सब थे उनकी संतान...जो भी स्मृतियाँ त्रिकालदर्शी परमपिता ने हमें दिलाई, वे उनका स्वरूप बन गये थे। सभी आत्माएँ हैं, अब घर जाना है...खेल पूरा हुआ...तुम मास्टर सर्वशक्तिवान हो, पूर्वज व पूज्य हो, कल्पवृक्ष के मास्टर बीज हो...इन सबका वे स्वरूप बन गये थे।

**11- त्याग के तेज से चमकता था उनका ललाट -** सब कुछ विश्व सेवा के लिए, अपने लिए कुछ भी नहीं। मेरा तो ये पुराना तन है इसलिए पुराने मकान में ही रहूँगा। नई कालीन बच्चों के लिए है, बाबा तो पुरानी ही यूज करेंगे। पहले बच्चे भोजन कर लें, पीछे बाबा करेंगे -ये कुछ झलकियां थी उनके त्याग भरे जीवन की।

कहीं भी आसक्ति नहीं। सर्वस्व प्रभु अर्पण कर दिया। मेरा कुछ भी नहीं -यही महान धारणाएँ थीं उनके योगी जीवन की। सच है बिना त्याग के तो कोई श्रेष्ठ तपस्वी भी नहीं बन सकता। मान-सम्मान का त्याग, सांसारिक इच्छाओं का त्याग और सबसे उत्तम त्याग का भी त्याग। अपने त्याग का अभिमान नहीं। कभी किसी ने उनके मुख से यह कहते नहीं सुना कि मैंने ये ये किया। यही त्याग उनके तपस्वी जीवन का आधार था।

**12- हाल खुशहाल व चाल फरिश्ते जैसी थी -** बाबा कहा करते थे कि यदि कोई पूछे कि क्या हालचाल है तो नशे से उत्तर दो...अरे, उनका हाल पूछते हो, जिन्हें भगवान मिल गया...परवाह थी पारब्रह्म में रहने वाले की, वही मिल गया, अब किसकी परवाह...उनका चेहरा ईश्वरीय मिलन की खुशी से चमकता रहता था। चेहरे पर आत्मिक सुख व प्राप्तियों के श्रेष्ठ भाग्य की खुशी प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होती थी।

जब वे चलते थे तो लगता था कि फरिश्ता चल रहा है। चेहरे से आभास होता था कि वे यहाँ नहीं हैं। हँस सी चाल, डबल लाइट फरिश्ते की चाल उनकी शान में चार चाँद लगाये रहती थी। सन् 1968 में तो उन्हें देखने वाले ब्रह्मावत्स महसूस करते थे कि उनका शरीर जैसे कि रूई का है क्योंकि योग-अग्नि में उनके देह की स्थूलता जलकर समाप्त हो गई थी। उनका चेहरा व चाल सबको परमात्म साक्षात्कार करा देती थी।

**13- मन निर्मल व निर्विकारी थी -** विश्व कल्याण की भावना से भरपूर उनका चित्त पूर्णतया निर्मल हो गया था। वे क्रोध से मुक्त पूर्णत: शांत हो गये थे। कोई यदि उनसे दुर्व्यवहार भी करता था, तो न वे आवेश में आते थे और न उनके लिए अपनी नाराजगी ही प्रकट करते थे।

सच तो यही है कि विश्व की इस प्रथम नम्बर की महानात्मा के समक्ष सभी विकारों ने आत्म-समर्पण कर दिया था। वे उनकी छत्रछाया बन गये थे। वे सम्पूर्ण निर्विकारी बन गये थे, उनके अंग-अंग से देवत्व झलकता था। जो भी उनसे मिलता, उनका सदा के लिए प्रशंसक बन जाता था।

**14- वे साक्षीदृष्टा व सबके सहयोगी थे -** वे गुणवान तो इतने थे कि स्वयं भगवान भी उनका गुणगान करते थे। अध्यात्म की सर्वोच्च स्थिति 'साक्षीदृष्टा' उन्होने धारण कर ली थी। उनके मन में सदा बहती थी शुभभावनाओं की गंगा। वे सभी को खुश व संतुष्ट करना चाहते थे। जो भी भारी मन से उनके पास आता था, वह हल्का होकर जाता था। उन्होने आदेश दे रखा था कि जब भी कोई बच्चा उनसे मिलने आये, चाहे बाबा आराम में हों, बाबा को तुरंत सूचना देना।

सबको आगे बढ़ाने की भावना थी उनमें। वे गरीबों के विशेष हितैषी थे। वे स्वयं स्वमान में रहते थे व दूसरों को सम्मान देते थे। विशेष मातृशक्ति के लिए उनके मन में विशेष आदर भाव था। वे उन्हें सदा कहते थे कि तुम अबला नहीं, शिव शक्ति हो। गरीब व भोली गाँव की माताएँ उनसे मिलकर अपनापन महसूस करती थीं, क्योंकि उनके मन में सभी के लिए प्रेम की धारा बहती थी। सम्मान तो वे इतना देते थे कि क्लास कराकर बाहर आते बच्चों को पीठ नहीं देते थे।

**15- परमात्म-प्यार में मग्न रहते थे -** परमात्म

शेष पेज 7 पर...